प्राथमिक कक्षाएँ के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :—

(1) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर सामान्य गति से बोली गई उच्चारित भाषा को भली-भांति समझ सकें।

(2) बालकों को इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर भाषा को ठीक-ठीक बोल सकें। वे जिस वातावरण में रहते हैं, उसको सामने रखते हुए, जहाँ तक बन पाए उनमें उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।

(3) उन्हें इस योग्य बनाना कि पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर वे उचित प्रवाह के साथ सस्वर वाचन (बोल, पढ़) कर सकें।

(4) बालकों में ऐसी क्षमता उत्पन्न करना कि वे उचित गति से उपयुक्त पाठ-सामग्री का मौन वाचन करते हुए उसे ठीक-ठीक समझ सकें तथा उनसे इस संबंध में जो-जो प्रश्न पूछे जाएँ,

Teacher's Signature

उन प्रश्नों का जैसा चाहिए, वैसा उत्तर दे सकें।

(5) उन्हें इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के भीतर छोटे-छोटे वाक्य तथा अनुच्छेद बनाने के समर्थ हो सकें। यह आवश्यक नहीं कि इन वाक्यों तथा अनुच्छेदों को बनाते समय संबंधित विषय भी वे स्वयं ही सोचे।

माध्यमिक कक्षाएँ उद्देश्य

(1) छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निश्चित की गई शब्दावली के भीतर सामान्य गति से बोली गयी उच्चारित भाषा को स्पष्ट रूप से समझ सकें।

(2) छात्रों में इतनी क्षमता उत्पन्न करना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के आधार पर भाषा को धीरे-धीरे बोल सकें। वे जिस वातावरण में रहते हैं, उसको सामने रखते हुए जहाँ तक बन पाए, उनका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए।

Teacher's Signature

③ विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम में निर्धारित शब्दावली के भीतर, अच्छी गति से सस्वर तथा मौन वाचन कर सकें तथा जो कुछ उन्होंने पढ़ा है, उसे स्पष्ट रूप से समझ भी सकें।

④ इस योग्य बनाना कि वे पाठ्यक्रम से बाहर, किसी अपठित अवतरण को शब्दकोष की सहायता से पढ़ सकें तथा उसे समझ भी सकें। परंतु इस बात की सावधानी रखी जाए कि पाठ्यक्रम के बाहर का अवतरण न हो कि जिसके लिए विशेष योग्यता की आवश्यकता पड़े।

⑤ छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे सामान्य गति से बोली गई भाषा को ठीक-ठीक समझ सकें।

भाषा संबंधी अन्य बातें

बालकों को शिक्षा प्रदान करते समय कुछ बातों पर ध्यान देना चाहिए—

① प्रारंभिक कक्षाओं में इस बात

Teacher's Signature

की सावधानी रखी जाए कि पाठ्य-सामग्री का चुनाव बालकों के वातावरण के आधार पर ही किया जाए। ऐसी कोई बात पाठ्यक्रम में न रखी जाए, जो उनके अनुभव-क्षेत्र से बाहर की हो।

(2) माध्यमिक शिक्षाओं के लिए जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाए उसका क्षेत्र व्यापक होना चाहिए। उसे केवल एक ही देश तक सीमित नहीं रखना चाहिए। उसका संबंध अन्य देशों से भी होना चाहिए।

(3) भाषा शिक्षण संबंधी उद्देश्यों की विस्तृत सूची अध्यापकों को भेजी जानी चाहिए। भाषा संबंधी परीक्षाएँ इन उद्देश्यों पर आधारित होनी चाहिए।

(4) शिक्षा संस्थाओं तथा परीक्षण-संस्थाओं को पाठ्यक्रम निर्धारित करते समय इन उद्देश्यों को अपने सामने रखना चाहिए।